मानसरोवर – कैलास

चीनी आक्रमण के बाद मानसरोवर – कैलास की यात्रा 22 वर्षोंतक बंद रहने के बाद 1981 में पुनः शुरू हुई। इस यात्रा का प्रबन्ध भारत सरकार का विदेश मन्त्रालय(Ministry of External Affairs) करता है। इसके लिये सरकार द्वारा जनवरी – फरवरी महीने में विज्ञापन निकाला जाता है। पासपोर्ट वगैरह के अलावा लगभग 50 हजार रुपयों की आवश्यकता होती है। यह पैसा वर्तमान मूल्य के अनुसार है जो समय के साथ बढ़ता रहता है।

मानसरोवर – कैलास यात्रा का वर्तमान पथ पिथौरागढ़ से आस्कोट, धारचूला होते हुए गरब्यांग – तक जाता है। फिर वहाँ से तकलाकोट जाकर ट्रक या जीपों से मानसरोवर एवं कैलास पहुँचकर उनकी परिक्रमा कर पुनः वापस तकलाकोट लौट आते हैं, जहाँ से पुनः वापस भारतीय सीमा में आ जाते हैं। अन्य सभी रास्ते जिनका नीचे उल्लेख है आजकल बंद हैं।

यह पूरी यात्रा लगभग तीन सप्ताह में समाप्त होती है। कैलास एवं मानसरोवर की परिक्रमा के दौरान तम्बुओं में रात बितानी पड़ती है क्योंकि परिक्रमामार्ग पर स्थित सभी गुफाएं चीनियों द्वारा नष्ट कर दी गयी हैं। आजकल केवल उनके भग्नावशेष ही मिलते हैं।

हिमालय के तीर्थों की यात्राएँ

यदि तीर्थों की पृथक् – पृथक् गणना न करके यात्रा की दिशाओं के ही अनुसार गणना करें तो हिमालय के तीर्थों को निम्न चार यात्राओं में गिना जा सकता है –

1 – मानसरोवर – कैलास – यात्रा, 2 – अमरनाथ (कश्मीर) – यात्रा, 3 – यमुनोत्तरी – गङ्गोत्तरी, केदारनाथ – बदरीनाथ की यात्रा तथा 4 – दामोदर – कुण्ड, मुक्तिनाथ और पशुपतिनाथ की यात्रा तथा इन तीर्थों के मार्गों के आसपास के तीर्थों की यात्रा।

आवश्यक सामग्री

हिमालय – प्रदेश की उक्त सभी यात्राओं में प्रायः एक – सी सामग्री आवश्यक होती है –

(1) – पूरे सूती और ऊनी (गरम) कपड़े। (2) – सिरपर ऊनी टोपी (मंकी कैप)। (3) – गुलूबंद, जिससे सिर और कान बाँधें जा सकें। (4) – ऊनी दस्ताने। (5) – ऊनी मोजे, सूती मोजे भी। (6) – छाता। (7) – बरसाती कोट और टोपी। (8) – ऐसे जूते जो बरफ और पत्थरों पर भी काम दे सकें। बाटा के मोटे रबरवाले तले के जूते सबसे अच्छे रहते हैं। (9) – बल्लम के समान नीचे लोहे से जड़ी सिर के बराबर लाठी, जिसके सहारे आवश्यक होने पर कूदा जा सके। (10) – दो अच्छे मोटे कम्बल। (11) – कोई एक ऐसा कपड़ा, जिसमें सब सामान लपेटा जा सके और जो वर्षा होने पर भीगे नहीं। (12) – थोड़ी खटाई, इमली या सूखे आलू बुखारे, जो चढ़ाई में जी मिचलाने पर खाये जा सकें। (13) – कुछ

दवाएँ – जैसे सोडामिंट, दस्त की दवायें, आयोडेक्स, सिरदर्द की दवायें, चोट पर लगाने का कोई मलहम। (14) – वैसलिन तथा धूप का चश्मा। (15) – मोमबत्ती, टार्च, टार्च के अतिरिक्त सेल, लालटेन। (16) – भोजन बनाने के हल्के बर्तन। साथ में एल. पी. जी. स्टोव रखना अधिक सुविधाजनक है।

नोट – (क) जहाँतक बने, इन यात्राओं में रूई के गद्दे, रूई की बंडी, रजाई आदि नहीं ले जाना चाहिये। इन कपड़ों के भीग जाने पर सूखना कठिन होता है। ट्रंक भी नहीं ले जाना चाहिये और धक्के तथा गिरने से टूटने – फूटनेवाली चीजें भी नहीं ले जानी चाहिये। साथ में कुछ सूखे मेवे तथा पेड़े या इसी प्रकार की कोई और सूखी मिठाई जलपान के लिये रखना अधिक सुविधाजनक होता है; किंतु छाता, बरसाती, कुछ खटाई, जलपान का थोड़ा सामान और एक हल्का पानी पीने का बर्तन अपने ही पास रखना चाहिये। कुली या सामान ढोनेवाले पशु कई बार मीलों दूर रह जाते हैं और आवश्यकता होने पर इन वस्तुओं के पास न रहने से कष्ट होता है।

(ख) किसी अपरिचित फल, पुष्प या पत्ते को खाना, सूँघना अथवा छूना कष्ट दे सकता है। उनमें अनेक विषैले होते हैं जो सूँघने या छूनेमात्र से कष्ट देते हैं।

(ग) इन यात्राओं में चलते हुए पर्वतीय जल को पीना हानिकर होता है । जल को किसी बर्तन में लेकर एक दो मिनट स्थिर होने देना चाहिये, जिससे उसमें जो पत्थर के छोटे – छोटे कण मिले होते हैं, वे नीचे बैठ जायँ। इसके बाद कुछ खाकर, एक दो दाने किसमिस या थोड़ी मिश्री खाकर, जल पीना उत्तम रहता है। प्रातः बिना कुछ खाये यात्रा करना कष्ट देता है। कुछ जलपान करके ही यात्रा करनी चाहिये। जल को झरने से बर्तन में लेकर स्थिर किये बिना सीधे झरने से पीने से पतले शौच लगने का भय रहता है।

मानसरोवर – माहात्म्य

ततो गच्छेत राजेन्द्र मानसं तीर्थमुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन् रुद्रलोके महीयते।। (तीर्थांक पृ. 34)

'पितामह और सावित्रीतीर्थ के बाद मानसरोवर को जाये। वहाँ स्नान करके व्यक्ति रुद्रलोक में प्रतिष्ठित होता है।'

कैलासपर्वते राम मनसा निर्मितं परम्।
ब्रह्मणा नरशार्दूल तेनेदं मानसं सरः।। (बाल्मी. बाल. 24/8)

विश्वामित्र कहते हैं, राम! कैलासपर्वत पर ब्रह्मा की इच्छा से निर्मित एक सरोवर है। मन से निर्मित होने के कारण इसका नाम मानस सर या मानसरोवर है।

कैलास – माहात्म्य

स्कन्दपुराण, काशीखण्ड अ. 13 तथा श्रीमद्भागवत में इसे देवता, सिद्ध तथा महात्माओं का

निवासस्थल कहा गया है। श्रीमद्भागवत (4/6/9-22) में इसे भगवान् शङ्कर का निवास तथा अतीव रमणीय बतलाया गया है।

जन्मौषधितपोमन्त्रयोगसिद्धैर्नरेतरैः।
जुष्टं किन्नरगन्धर्वैरप्सरोभिर्वृतं सदा।। (श्रीमद्भा. 4/6/9)

गोस्वामी तुलसीदासजी ने –

परम रम्य गिरिबरु कैलासू। सदा जहाँ सिव उमा निवास।।

(मानस, बाल. 104/4)

सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किंनर मुनिबृंद।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिव सुखकंद।। (मानस, बाल. 105)
हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं। ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं।।

(मानस, बाल. 105/1)

– आदि शब्दों में इन्हीं पुराण – वचनों का भाव भर दिया है। कैलास के विस्तृत वर्णन के लिये हरिवंशपुराण (दाक्षिणात्य पाठ) के 204 से 281 अध्यायों को देखना चाहिये।

जैनतीर्थ

कैलास जैनतीर्थों में भी माना जाता है। यह सिद्धक्षेत्र है। वहाँ से आदिनाथ स्वामी मोक्षको प्राप्त हुए हैं।

मानसरोवर – कैलासयात्रा

हिमालय की पर्वतीय यात्राओं में मानसरोवर – कैलास की यात्रा ही सबसे कठिन है और इसकी कठिनाई की तुलना केवल बदरीनाथ से आगे स्वर्गारोहण या मुक्तिनाथ की यात्रा से ही कुछ की जा सकती है; किंतु स्वार्गारोहण या मुक्तिनाथ की यात्रा जब कि गिने – चुने दिनों की है, मानसरोवर – कैलास की यात्रा में यात्री को लगभग तीन सप्ताह तिब्बत में ही रहना पड़ता है। केवल यही एक यात्रा है, जिसमें यात्री हिमालय को पूरा पार करता है। दूसरी यात्राओं में तो यह हिमालय के केवल एक पृष्ठांश के ही दर्शन कर पाता है।

मानसरोवर – कैलास, अमरनाथ, गोमुख, स्वर्गारोहण जैसे क्षेत्रों की यात्रा में – जहाँ यात्री को समुद्र – स्तर से 12000 फुट या उससे ऊपर जाना पड़ता है – यात्री यदि आक्सिजन – मास्क साथ ले जाय तो हवा पतली होने एवं हवा में आक्सिजन की कमी से होनेवाले श्वासकष्ट से वह बच जायगा। गैस – पात्र के साथ इस मास्क का बोझ लगभग 5 किलो होता है और वैज्ञानिक सामग्री बेचनेवाली कलकत्ते या बंबई की कंपनियों के यहाँ यात्रा के उपयुक्त मोड़कर रखने योग्य (फोल्डिंग) मास्क मिल जाता है।

मानसरोवर – कैलास पहुँचने के लिये भारत से अनेक मार्ग जाते हैं – जैसे कश्मीर से लद्दाख होकर जानेवाला मार्ग, नेपाल से मुक्तिनाथ होकर जानेवाला मार्ग, डरमा दर्रे से जानेवाला मार्ग, गङ्गोत्तरी से होकर जानेवाला मार्ग आदि। किंतु ये मार्ग बहुत लंबे हैं और इनमें कठिनाइयाँ भी बहुत हैं। इन मार्गों से निर्जन प्रदेश में, हिमप्रदेश में, बहुत अधिक चलना पड़ता है। फलतः ये तीर्थयात्री के सामान्य मार्ग नहीं हैं। तितिक्षु, संग्रहहीन साधु अकेले – दुकेले इन मार्गों से यात्रा करते हैं और इनके समीपवर्ती प्रदेश के पर्वतीय व्यापारी भी भेड़, बकरी, खच्चर या घोड़ों पर सामान लादकर इन मार्गों से यदा – कदा आते – जाते हैं। यात्रियों के लिये सामान्यतः निम्नलिखित तीन ही मार्ग हैं –

1 – पूर्वोत्तर रेलवे के टनकपुर स्टेशन से मोटर – बस द्वारा पिथौरागढ़ जाकर फिर वहाँ से पैदल यात्रा करते 'लिपू' नामक दर्रा पार करके जानेवाला मार्ग।

2 – उसी रेलवे के काठगोदाम स्टेशन से मोटर – बस द्वारा कपकोट जाकर फिर पैदल यात्रा करते हुए 'ऊटा', 'जयन्ती' तथा 'कुंगरी बिंगरी' घाटियों को पार करके जानेवाला मार्ग।

3 – उत्तर रेलवे के ऋषिकेश स्टेशन से मोटर – बस द्वारा जोशीमठ जाकर वहाँ से पैदल यात्रा करते हुए 'नीती' की घाटी को पार करके पैदल जानेवाला मार्ग।

इन तीनों ही मार्गों में यात्री को भारतीय सीमा का जो अन्तिम बाजार मिलता है, वहाँतक उसे ठहरने के स्थान, भोजन का सामान तथा भोजन बनाने के बर्तन सुविधापूर्वक मिलते रहते हैं। वहाँतक उसे न किसी मार्गदर्शक की आवश्यकता है न कोई अन्य कठिनाई होती है। जो कुली या घोड़ा उसने सामान ढोने अथवा सवारी के लिये साथ लिया है, वही उसके मार्गनिर्देश को पर्याप्त है। वैसे पर्वत में मुख्य एक ही मार्ग होने से मार्ग भूलने का कोई भय नहीं रहता।

जोशीमठवाले मार्ग को छोड़कर शेष दो मार्गों में कुली तथा सवारी पूरी यात्रा के लिये नहीं मिलते। वे निश्चित दूरी के लिये ही मिलते हैं। उसके आगे नये कुली तथा सवारी की व्यवस्था करनी पड़ती है और उस व्यवस्था के लिये कभी – कभी दो एक दिन रुकना भी पड़ता है।

इन तीनों ही मार्गों में भारतीय सीमा का जो अन्तिम बाजार है, वहाँ से तिब्बती भाषा का जानकार एक मार्गदर्शक (गाइड) साथ अवश्य ले लेना पड़ता है; क्योंकि तिब्बत में कोई हिंदी या अंग्रेजी जाननेवाला मिलना कठिन है। तिब्बत में पूरे समय तंबू में ही रहना होता है, इसलिये किराये का तंबू भी उसी स्थान से लेना पड़ेगा और तिब्बती सर्दी से बचने के लिये किराये के चुटके (भारी कम्बल) तथा भोजन बनाने के बर्तन भी वहीं से लेने चाहिये। तिब्बत में दाल नहीं पकेगी, कोई शाक नहीं मिलेगा, चावल या आटा मिलेगा भी तो अन्यन्त मँहगा और बड़े कष्ट से। नमक को छोड़कर कोई मसाला नहीं मिलेगा। कहीं – कहीं दूध, मक्खन, दही और मट्ठा (छाछ) मिलेगा, पर सर्वत्र नहीं। अतः तिब्बत में जितने दिन रहना है, उतने दिनों के लिये भोजन का पूरा सामान भारतीय अन्तिम बाजार से ही साथ ले लेना चाहिये। चावल, आटा, आलू, चीनी, चाय, डब्बे का दूध, मिट्टी का तेल, मसाले, मोमबत्ती आदि जो

कुछ आवश्यक हो, सब उसी बाजार से ले लिया जाना चाहिये। तिब्बतीय क्षेत्र में कुछ पाने की आशा नहीं करनी चाहिये।

आवश्यक सूचना

(क) मानसरोवर – कैलास यात्रा में जब आप तिब्बत की सीमा पर पहुँचेगें, तब कम्यूनिस्ट चीन के सैनिक आपकी तलाशी लेंगे। पूजा – पाठ की पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कोई भी पुस्तक, नक्शे, समाचार – पत्र – पत्रिका, दूरबीन, कैमरा, बंदूक, पिस्तौल जैसे अस्त्र वे साथ नहीं ले जाने देते। अत: यदि आपके पास ऐसी सामग्री हो तो भारतीय सीमा में ही छोड़ देनी चाहिये या अन्तिम पत्रालय (डाकघर) से उसे अपने घर पार्सल द्वारा भेज देना चाहिये।

(ख) जहाँ से बर्फ मिलना आरम्भ होता है, वहाँ से भारतीय सीमा में लौटनेतक प्रात: सायं दोनों समय पूरे मुख पर और हाथों में – विशेषत: हथेली के पृष्ठ भाग में वैसलिन अच्छी प्रकार लगाते रहिये। ऐसा नहीं करने से हाथ फट सकते हैं और मुख – विशेषत: नाक पर हिमदंश के घाव हो सकते हैं।

(ग) घाटी पार करने के दिन प्रात: सूर्योदय से जितना पहले चल सकें चल देना चाहिये। सूर्य की धूप तेज होने पर बर्फ नरम हो जायगी और उसमें पैर गड़ने लगेंगे। बर्फ पर धूप पड़ने से जो चमक होती है, उससे नेत्रों को बहुत पीड़ा होती है। ऐसे समय धूप का चश्मा लगाने से यह कष्ट नहीं होता।

नोट – तिब्बतीय क्षेत्र में कुली नहीं मिलते, घोड़े भी कम ही मिलते हैं। सामान ढोने तथा सवारी के लिये याक (भैंस की जाती का पशु) मिलता है।

विशेष बातें

जिनका शरीर बहुत मोटा है, जिन्हें कोई श्वास का रोग या हृदयरोग हो अथवा संग्रहणी – जैसा कोई रोग हो, उन्हें यह यात्रा नहीं करनी चाहिये। छोटे बालकों को यात्रा में साथ नहीं लेना चाहिये और अत्यन्त वृद्धों के लिये भी यह यात्रा कठिन है। तिब्बत में अब हत्या या डकैती का कोई भय नहीं रहा है। अपना सामान सम्भालकर सावधानी से रखना चाहिये; क्योंकि चोरी का भय तो प्राय: सर्वत्र ही रहता है।

मानसरोवर

पूरे हिमालय को पार करके, तिब्बती पठार में लगभग 30 मील जाने पर पर्वतों से घिरे दो महान् सरोवर मिलते हैं। मनुष्य के दोनों नेत्रों के समान वे स्थित हैं और उनके मध्य में नासिका के समान ऊपर उठी पर्वतीय भूमि है, जो दोनों को पृथक् करती है। इनमें एक है राक्षसताल और दूसरा

मानसरोवर। राक्षसताल विस्तार में बहुत बड़ा है, वह गोल या चौकोर नहीं है। उसकी कई भुजाएँ मीलों दूरतक टेढ़ी-मेढ़ी होकर पर्वतों में चली गयी हैं। कहा जाता है कि किसी समय राक्षसराज रावण ने वहीं खड़े होकर देवाधिदेव भगवान् शङ्कर की अराधना की थी। दूसरा है सुप्रसिद्ध मानसरोवर। उसका जल अत्यन्त स्वच्छ और अद्‌भुत नीला है। उसका आकार लगभग गोल या अण्डाकार है और उसका बाहरी घेरा अनेक विद्वानों के मत से 22 मील का है। मानसरोवर 51 शक्ति पीठों में से एक है। सती की दाहिनी हथेली इसी में गिरी थी।

मानसरोवर में हंस बहुत हैं-राजहंस भी हैं और सामान्य हंस भी। सामान्य हंसों की दो जातियाँ हैं, एक मटमैले सफेद रंग की और दूसरे बादामी रंग की। ये आकार में बतखों से बहुत मिलते हैं; किंतु इनकी चोंचें बतखों से पतली हैं, पेट का भाग भी पतला है और ये पर्याप्त ऊँचाई पर दूरतक उड़ते हैं।

मानसरोवर में मोती हैं या नहीं, पता नहीं; किंतु तट पर उनके होने का कोई चिह्न नहीं। कमल उसमें सर्वथा नहीं हैं, एक जाति की सिवार अवश्य है। किसी समय मानसरोवर का जल राक्षसताल में जाता था। जलधारा का वह स्थान तो अब भी है; किंतु वह भाग अब ऊँचा हो गया है। प्रत्यक्ष में मानसरोवर से कोई नदी या छोटा झरना भी नहीं निकलता। किंतु मानसरोवर पर्याप्त उच्चप्रदेश में है। अतः कुछ अन्वेषक अंग्रेज विद्वानों का मत है कि कई नदियाँ मानसरोवर से ही निकलती हैं, जिनमें सरयू और ब्रह्मपुत्र के नाम उल्लेखनीय हैं। मानसरोवर का जल भूमि के भीतर के मार्गों से मीलों दूर जाकर उन नदियों के स्रोत के रूप में व्यक्त होता है।

मानसरोवर के आस-पास या कैलास पर कहीं कोई वृक्ष नहीं, कोई पुष्प नहीं। सच तो यह है कि उस क्षेत्र में छोटी घास और अधिक से अधिक फुट, सवा फुटतक ऊँची बढ़नेवाली एक कँटीली झाड़ी को छोड़कर और कोई पौधा नहीं होता। मानसरोवर का जल सामान्य शीतल है। उसमें मजे में स्नान किया जा सकता है। उसके तट पर रंग-बिरंगे पत्थर और कभी कभी स्फटिक के भी छोटे टुकड़े पाये जाते हैं।

कैलास

मानसरोवर से कैलास लगभग 20 मील दूर है। वैसे उसके दर्शन मानसरोवर पहुँचने से बहुत पूर्व ही होने लगते हैं। जौहर-मार्ग में तो कुंगरी और बिंगरी की चोटी पर पहुँचते ही यात्री को कैलास के दर्शन हो जाते हैं-यदि उस समय आकाश में बादल न हों। तिब्बत के लोगों में कैलास के प्रति अपार श्रद्धा है। अनेक तिब्बतीय श्रद्धालु पूरे कैलास की 32 मील की परिक्रमा दण्डवत् प्रणिपात करते हुए पूरी करते हैं।

भगवान् शङ्कर का दिव्य धाम कैलास यही है या और कोई यह विवाद ही व्यर्थ है। वह कैलास

तो दिव्यधाम है, अपार्थिव लोक है; किंतु जैसे साकेत का प्रतिरूप अयोध्याधाम एवं गोलोक का प्रतिरूप व्रजधाम इस धरा पर प्राप्य हैं, वैसे ही यह कैलास उस दिव्य कैलास का प्रतिरूप है – ऐसी अपनी धारणा है। इस कैलास के दर्शन करते ही यह बात स्पष्ट हृदय में आ जाती है कि वह असामान्य पर्वत है – देखे हुए समस्त हिमशिखरों से सर्वथा भिन्न और दिव्य है।

पूरे कैलास की आकृति एक विराट् शिवलिङ्ग जैसी है, जो पर्वतों से बने एक षोडशदल कमल के मध्य रखा है। ये कमलाकार शृङ्गवाले पर्वत भी इस प्रकार हैं कि वे उस शिवलिङ्ग के लिये अर्घा बने जान पड़ते हैं। उनके चौदह शृङ्ग तो गिने जा सकते हैं; किंतु सम्मुख के दो शृङ्ग झुककर लंबे हो गये हैं और उन्हें ध्यान देने पर ही लक्षित किया जा सकता है। उनका यह झुका भाग ऐसा हो गया है जैसे अर्घे का आगे का लंबा भाग। इसी भाग से कैलास का जल गौरी – कुण्ड में गिरता है। शिवलिङ्गाकार कैलासपर्वत आसपास के समस्त शिखरों से ऊँचा है। वह कसौटी के ठोस काले पत्थर का है और ऊपर से नीचेतक सदा दुग्धोज्वल बरफ से ढका रहता है। किंतु उससे लगे हुए वे पर्वत जिनके शिखर कमलाकार हो रहे है, कच्चे लाल मटमैले पत्थर के हैं। आसपास के सभी पर्वत इसी प्रकार कच्चे पत्थरों के हैं। कैलास अकेला ही वहाँ ठोस काले पत्थर का शिखर है। कमलाकार शिखर क्योंकि कच्चे पत्थर के हैं, उनके शिखर गिरते रहते हैं; एक ओर की चार पंखड़ियों जैसे शिखर इतने गिर गये हैं कि अब उनके शिखरों के भाग कदाचित् कुछ वर्षों में बराबर हो जायँ।

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि कैलास के शिखर के चारों कोनों में ऐसी मन्दिराकृति प्राकृतिक रूप से बनी है, जैसी बहुत से मन्दिरों के शिखरों पर चारों ओर बनी होती है।

कैलास की परिक्रमा 32 मील की है, जिसे यात्री प्राय: 3 दिनों में पूरा करते हैं। यह परिक्रमा कैलास शिखर की उसके चारों ओर के कमलाकार शिखरों के साथ होती है; क्योंकि कैलास शिखर तो अस्पृश्य है और उसका स्पर्श यात्रा – मार्ग से लगभग डेढ़ मील सीधी चढ़ाई पार करके ही किया जा सकता है और यह चढ़ाई पर्वतारोहण की विशिष्ट तैयारी के बिना शक्य नहीं है। कैलास के शिखर की ऊँचाई समुद्र – स्तर से 19000 फुट कही जाती है।

(यह लेख मुख्यत: गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित तीर्थांक पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁